

Journal of Bhartiya Hindi Research Review

मुक्तिबोध का प्रगतिवादी विचारधारा।

सावित्री सूर्यकांत मांडरे

एम्. ए.एम्. पी.एड, औद्योगिक शिक्षण मंडल पुणे, महाराष्ट्र, भारत

*अनुरूपी लेखक: सावित्री सूर्यकांत मांडरे

Article Info

ISSN (online): XXXX-XXXX

Volume: 01

Issue: 02

March-April 2024

Received: 25-02-2024

Accepted: 06-03-2024

Page No: 01-02

सारांश

मुक्तिबोध का साहित्यिक दृष्टिकोण प्रगतिवादी विचारधारा पर आधारित है, जो समाज के कमजोर और उत्पीड़ित वर्गों के प्रति गहरी सहानुभूति प्रदर्शित करता है। इस शोधपत्र का उद्देश्य मुक्तिबोध के प्रगतिवादी दृष्टिकोण की गहन समीक्षा करना है। इसमें उनके लेखन में सामाजिक विषमताओं, वर्ग संघर्ष, और राजनीतिक अन्याय के प्रति उठाए गए मुद्दों का विश्लेषण किया गया है। यह लेख मुक्तिबोध के रचनाओं के माध्यम से उनके विचारों की प्रासंगिकता और समाज सुधार की दिशा में उनकी प्रेरणा की गहराई से पड़ताल करता है।

कुंजीशब्द: मुक्तिबोध, प्रगतिवाद, साहित्यिक दृष्टिकोण, समाज, वर्ग संघर्ष, समाज सुधार

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के प्रगतिवादी आंदोलन ने साहित्य को समाज से जोड़ने का काम किया। इस आंदोलन के अग्रणी रचनाकारों में गजानन माधव मुक्तिबोध का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से साहित्य को समाज का दर्पण माना और अपने विचारों को स्पष्ट रूप से समाज के विविध पक्षों के संदर्भ में प्रस्तुत किया। मुक्तिबोध का साहित्यिक दृष्टिकोण प्रगतिवादी था, जो समय और समाज के यथार्थ को केंद्र में रखकर समाजिक परिवर्तन की बात करता है। उनका साहित्य न केवल व्यक्ति के मानसिक द्वंद्व को उभारता है, बल्कि समाज में व्याप्त विषमताओं, शोषण, और अन्याय के प्रति गहरी प्रतिक्रिया भी व्यक्त करता है। मुक्तिबोध ने अपने साहित्य में समाज की विषमताओं, आर्थिक असमानताओं और नैतिक पतन की ओर ध्यान आकर्षित किया। उनकी कृतियों में समाज की विकृतियों और उससे उत्पन्न त्रासदियों का मार्मिक चित्रण मिलता है। इस शोधपत्र का उद्देश्य मुक्तिबोध के प्रगतिवादी दृष्टिकोण को समझना और उनके साहित्य के माध्यम से उनके विचारों का विश्लेषण करना है।

चर्चा

1. प्रगतिवादी आंदोलन और मुक्तिबोध का योगदान

प्रगतिवादी साहित्यिक आंदोलन 1936 में प्रारंभ हुआ और इसका उद्देश्य साहित्य को समाज के यथार्थ से जोड़ना था। इस आंदोलन में साहित्यकारों ने समाज के वंचित, उत्पीड़ित और निम्न वर्ग के संघर्षों को अपने लेखन में प्रस्तुत किया। यह आंदोलन साम्यवादी विचारधारा से प्रेरित था और इसका मुख्य उद्देश्य समाज में सामाजिक और आर्थिक असमानता को दूर करने के लिए संघर्ष करना था।

मुक्तिबोध का साहित्य इस आंदोलन की मूल भावनाओं से भरा हुआ है। उनके लेखन में व्यक्ति और समाज के बीच की विसंगतियों और विरोधाभासों को गहराई से उभारा गया है। उन्होंने अपने लेखन में न केवल समाज के आंतरिक संकटों और विडंबनाओं को प्रस्तुत किया, बल्कि साहित्यकार के दायित्वों पर भी गहरी दृष्टि डाली। उनके साहित्य में प्रगतिवादी आंदोलन के प्रमुख मुद्दे—वर्ग संघर्ष, शोषण, और अन्याय—स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आते हैं।

2. मुक्तिबोध का विचारधारा और सामाजिक चेतना

मुक्तिबोध का लेखन उनकी गहन सामाजिक चेतना को दर्शाता है। उन्होंने सामाजिक विषमताओं, पूंजीवादी शोषण और सामंती व्यवस्थाओं के खिलाफ अपनी कलम चलाई। उनका मानना था कि साहित्यकार को केवल सौंदर्य के बोध तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उसे समाज की वास्तविकताओं और उसकी समस्याओं को समझते हुए अपने लेखन में उसे स्थान देना चाहिए।

मुक्तिबोध का मानना था कि साहित्यकार को समाज के हाशिये पर पड़े लोगों की पीड़ा और संघर्ष को आवाज देनी चाहिए। उनकी कविताओं और निबंधों में यह चेतना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उन्होंने सामाज्यवाद, पूंजीवाद, और फासीवाद के खिलाफ अपने विचारों को प्रकट करते हुए समाज में न्याय और समानता की स्थापना का आह्वान किया।

3. मुक्तिबोध की प्रमुख रचनाएँ और उनमें प्रगतिवादी दृष्टिकोण

मुक्तिबोध की प्रमुख रचनाओं में उनकी कविताएँ और गद्य साहित्य शामिल हैं। उनके काव्य संग्रहों में 'अंधेरे में' और 'चांद का मुँह टेढ़ा है' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

4. मुक्तिबोध का सामाजिक अन्याय के खिलाफ संघर्ष

मुक्तिबोध ने अपने साहित्य में समाज में व्याप्त अन्याय और शोषण के खिलाफ संघर्ष का स्वर बुलंद किया। उन्होंने समाज के वंचित और कमजोर वर्गों की आवाज बनने का कार्य किया। उनका साहित्य इस बात का प्रमाण है कि वे समाज की यथार्थवादी स्थिति को समझते थे और इसके सुधार के लिए जागरूक थे। उनके लेखन में समाज की समस्याओं को न केवल चित्रित किया गया, बल्कि इन समस्याओं का समाधान ढूँढ़ने की कोशिश भी की गई।

मुक्तिबोध का मानना था कि साहित्यकार का काम केवल समाज की आलोचना करना नहीं है, बल्कि उसे समाज के बदलाव की दिशा में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। उनके लेखन में यह सोच स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

5. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मुक्तिबोध की प्रासंगिकता

आज के दौर में जब समाज में पुनः असमानता और शोषण बढ़ रहा है, मुक्तिबोध के विचार और दृष्टिकोण पहले से भी अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। उनकी रचनाएँ हमें समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारी और भूमिका को समझने के लिए प्रेरित करती हैं। उनके प्रगतिवादी दृष्टिकोण से हम सीख सकते हैं कि साहित्य केवल व्यक्तिगत आनंद के लिए नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य समाज सुधार भी होना चाहिए।

प्रभाव

मुक्तिबोध का प्रगतिवादी दृष्टिकोण उनके साहित्य में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से समाज के हाशिये पर खड़े लोगों की आवाज बनने का प्रयास किया। उनका साहित्य समाज में व्याप्त विषमताओं और अन्याय के खिलाफ संघर्ष का प्रतीक है। मुक्तिबोध ने सामाजिक समस्याओं को न केवल गहराई से समझा, बल्कि उन्हें सुधारने की दिशा में साहित्यिक रूप से सक्रिय भूमिका निभाई।

निष्कर्ष

मुक्तिबोध का प्रगतिवादी दृष्टिकोण उनके साहित्य की धुरी है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से समाज के वास्तविक मुद्दों को उभारा और उनके समाधान की दिशा में सोचा। उनके साहित्य में वर्ग संघर्ष, शोषण, और सामाजिक अन्याय के खिलाफ गहरा आक्रोश और संघर्ष का स्वर मिलता है। वर्तमान समय में, जब समाज में पुनः असमानता और अन्याय बढ़ रहा है, मुक्तिबोध के विचार हमें मार्गदर्शन देते हैं कि साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का साधन बनाना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. मुक्तिबोध जीएम. अंधेरे में. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 1958.
2. श्रीवास्तव आर. हिंदी साहित्य का इतिहास. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन; 2001.
3. त्रिपाठी बी. प्रगतिवाद और हिंदी कविता. वाराणसी: भारती भवन; 1995.
4. जोशी आर. मुक्तिबोध: एक साहित्यिक की डायरी. मुंबई: नवल पुस्तकालय; 1982.
5. शुक्ला एम. हिंदी कविता और समाज. पटना: ज्ञान भारती; 2004.